अध्याय 9
जीवन मूल्य शिक्षा
(Value Based Education for Life)

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मूल्य शिक्षा नितांत आवश्यक है। मूल्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति मानव से महामानव व नर से नारायण बनने की सामर्थ्य रखता है। अतः आज के युग मे भी जीवन मूल्य शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है।

आज के युग में दूसरे का प्रबधंन करना आसान हो सकता है पर खुद अपनी ही जिदगी का प्रबनन करना इंसान के लिये बहुत बडी चुनौती है। क्योकि पुस्तकीय ज्ञान व सामान्य ज्ञान भले होगा, लेकिन जब तक मूल्यों की शिक्षा जीवन में समाहित नही होगी, तब तक अमूल्य जीवन भी मनुष्य जन्म की सार्थकता को सिद्व नही करता है।

रोजमर्रा की जिदंगी में चिंता क्रोध और तनाव जैसी ढेर सारी समस्याओं का सामना करना पडता है अतः जीवन मूल्य शिक्षा ही उसके समाधान का मार्ग है।

मूल्य शिक्षा का अर्थ

मनुष्य ही नही वरन् जीव मात्र के लिये सदभाव की भावना और परमार्थ की कामना से युक्त शिक्षा को मूल्य शिक्षा कहतें है।

प्राचीन काल से जीव मात्र के प्रति सद्भाव एवं सबके कल्याण की कामना की शिक्षा दी जाती रही है। अतः सांप को भी नाग देवता कहकर दूघ पिलाने की परम्परा मूल्य शिक्षा की देन है।
इस देश में –

सर्वे भवन्तु सुखिन :
सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद दुःख भाग्भवेत

ऐसी महान सोच मूल्य शिक्षा की देन है। जिसके तहत कल्याण प्रार्थना –''सभी सुखी हो, निरोग हो, सर्वत्र शुभ ही देखे, सभी दुर्गणों का शमन और सद्गुणों का दर्शन हो। मन वचन और कर्म से की गई प्रार्थना या प्राप्त शिक्षा व्यक्ति का चरित्र निर्माण करती है।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान में देव भूमि, पवित्र भूमि, पूण्य भूमि भारत में भी मूल्य शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। जिस धरा पर देवी देवताओं ने जन्म लिया, महापुरुषों के त्याग एंव शहीदो के बलिदान कर अपार गाथाओं से इतिहास भरा पडा है उस देश के कई व्यक्तियों का ध्यैय अर्थ अर्जन करना तथा विश्व बन्धुत्व की भावना के स्थान पर स्वहित सर्वोपरि हो गया है। अतः मूल्य शिक्षा की नितांत आवश्यकता है।

मूल्य शिक्षा के अभाव में पूर्ण शान्ति का अभाव होता जा रहा है। अतः भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, हत्याए, आंतकवाद भाई भतीजावाद, काला बाजारी, व्यभिचार की घटनाए देखने की मिलती है अतः श्रेष्ठ

संस्कारो से युक्त व्यक्ति निर्माण के लिये मूल्य शिक्षा अत्यावश्यक है।

जीवन मूल्य शिक्षा क्रोध, ईष्या स्वार्थ, अहम द्वेष असत्य, कपट, विश्वासघात आदि विकारो का जन्म नही होने देती है। इससे मनुष्य मनुष्यत्व से देवत्व की ओर अग्रसर होता है।

जीवन मूल्य शिक्षा को जीवन में अंगीकार करने से व्यक्ति को परमात्मा से भी जोड़ने का सामर्थ्य प्राप्त कर सकता है। जीवन मूल्य शिक्षा व्यक्ति के विकार दूर कर उसे ष से महर्षि बना देती है तथा **वाल्मीकी** जी का उदाहरण हम सबके सामने है उन्होने आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का सामर्थ्य प्राप्त कर लिया और **विष्णु अवतार श्री रामचन्द्र जी** के जीवन पर रामायण की रचना दिव्य दृष्टि के बल पर की। मूल्य शिक्षा का प्रादुभाव चिंतन से बढता है और व्यक्ति चाहे तो सारे सदगुण जीवन में धारण कर अपना जीवन सफल बना सकता है। स्वामी विवेकानन्दजी के गुरुजी **स्वामी रामकृष्णजी परमहंस** ने स्कूली या उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। लेकिन विवेकानन्दजी का सृजन किया तथा विश्व के महा ज्ञानियो की श्रेणी में उनका नाम श्रद्वा से लेते है और देश विदेश में जीवन जीने की शिक्षा दी तथा 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म ससंद में अपने विश्व स्तुल्य सम्बोधन से मूल्य शिक्षा से प्राप्त घ्येय को पुनः प्रतिष्ठित किया।

जीवन सफल करने के सहायक 'मनुष्य जीवन अमूल्य है और मूल्य शिक्षा जीवन सफल करने में सहायक है। भारत के इतिहास इससे भरा पडा है **महावीर स्वामीजी** और **महात्मा बुद्व** राज पाट वैभव से युक्त राजा होकर भी जीवन का अंतिम लक्ष्य परमात्मा प्राप्ति को माना। अतः सन्यास मार्ग अपना लिया। **मीरा बाई,** महारानी होते हुए भी ईश्वर भक्ति अत्यावश्यक है इस भाव से प्रभु भक्ति करते हुए कृष्ण भगवान की मूर्ति में साक्षात समा गई **पन्नाधाय** की स्वामी भक्ति का परिणाम स्वयं पुत्र का बलिदान देकर भी राजवंश के राजकुमार उदयसिहजी की रक्षा की। मूल्य शिक्षा जीवन में अंगीकार करने वाला व्यक्ति अपने जीवन को धन्य कर देता है, अपने जीवन को सफल कर देता है।

भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक अधिकारी का एक दैनिक समाचार पत्र में एक लेख छपा था जिसे **प्रोफेसर के. नरहरिजी** बेंगलुरू के प्राध्यापक ने लिखित पुस्तक में बताया कि छुटटी के दिन वे अपने परिवार के साथ नदी तट पर पिकनिक पर गए हुए आनंद मना रहे थे कि उनको एक पेड दिखाई दिया उस पर बया ने बहुत से घोंसले बना रखे थे। यह सब जानते कि बया अपने अंडे और नन्हें बच्चों को पालने के लिये लम्बा घोसला बनाती है। इन घोंसलों को देखकर अधिकारी का मन ललचा गया उसके मन में कुछ घोंसलें ले जाकर अपने घर के शो केस में रखने की इच्छा जाग्रत हुई पर घोंसले काफी उर्चाई पर थे। इसलिये वह पेड़ पर चढ़कर नही ला सकते थे तभी उन्हें फटे पुराने कपडे पहने अपने हाथ में डंडा लिए एक चरवाहा बालक दिखाई पड़ा अधिकारी ने उस चरवाहे को बुलाकर घोंसला तोडकर उन्हें देने को कहा पर उस बालक ने उनसे पुछा कि आपको घोंसला क्यों चाहिए अधिकारी ने जवाब दिया कि घोंसलें सुन्दर हैं इसलिए वे उसे ले जाकर अपने घर में रखना चाहते हैं, चरवाहा बालक ने घोसला तोडने से इंकार कर दिया। अधिकारी द्वारा रुपये देने के प्रलोभन के बावजूद भी लडके ने साफ मना कर दिया इसका कारण जानने के लिये अधिकारी के आग्रह करने पर बालक ने कहा मान लीजिए मैं घोंसला तोड़कर आपको दे देता हूँ हो सकता है, उस घोंसले मे किसी चिडिया के अंडे बच्चे न पाकर दुःखी होगी चीखेगी, चिल्लाएगी, घोंसला तोड़कर नहीं दूंगा न ही आपको तोड़ने दूंगा यह कहते हुए वह पेड़ के पास खड़ा हो गया। अपने छपे लेख के अंत में उस आई.ए.एस. अधिकारी ने लिखा है शिक्षित कौन आई. ए.एस. उत्तीर्ण में या अंगुठा टेक वह बालक वह सोचने लगा कि इस अनपढ़ बालक में जो संवेदना

थी वह आई.ए.एस. उत्तीर्ण मुझमें क्यों नहीं है वह लड़का मुझसे बढ़कर शिक्षित है। परिवार में प्राप्त जीवन मूल्य शिक्षा का परिणाम है। अपने देश में प्राचीन जमाने में हर घर में जीवन मूल्यो की शिक्षा दादा–दादी माता–पिता और बड़ों से मिलती थी। व्यक्ति सत्य सदाचार, ईमानदारी, सेवाभाव, दयालुता, परोपकार से युक्त जीवन जीता था जिसमें मूल्य शिक्षा का अमूल्य योगदान है। रोटी कपड़ा मकान जीने के लिये आवश्यक है तो जीवन मूल्य शिक्षा अत्यावश्यक है। आज के युग में जीवन और प्राप्त शिक्षा आर्थिक क्षैत्र के लिए समर्पित कर दी है अतः आवश्यकता इस बात की है कि जीवन सफल बने इस हेतु परमार्थ भाव भी समाहित करना है। विकार विति से दूर रहना है। प्रत्येक व्यक्ति को चंदन वृक्ष की भाति रहने की जरुरत है, विषधर सांप भी अपना प्रभाव नही दिखा सकता लेकिन चन्दन की महक का प्रभाव सांप पर घंटों रहता है।

भारत में जीवन मूल्य शिक्षा अलौकिक है क्योकि यहा समर्पण, त्याग, सेवा, परमार्थ है व्यक्ति के पास सम्पत्ति अथाह है पर समर्पण कितना है। हदय में त्याग करुणा भाव कितनी है यह महत्वपूर्ण है भारत में जो सम्पत्ति को छोड देता है वह ज्यादा प्रतिष्ठा पाता है महावीर स्वामी महात्मा बुद्व भामाशाह और अनेक दानवीर इसके उदाहरण हैं जबकि विदेशों में जो धन शक्ति और वैभव से युक्त है वही महान है जबकि भारत वर्ष में जीवन मूल्य युक्त व्यक्ति महान माना जाता रहा है जो हंसते–हंसते राज्य छोड़ देते है जीता हुआ राज्य छोड देते है यही है जीवन मूल्य शिक्षा का परिणाम। अतः जीवन मूल्य शिक्षा अमूल्य है देश हित में परित्याग, तन मन का समर्पण, महापुरुषों द्वारा प्रदत्त निःशुल्क ज्ञान अमूल्य है, यह भारतीय मूल्य है, दर्शन है, दृष्टि है। हजारो साल की परम्परा से नई पीढी को जो देते है वही जीवन मूल्य ज्ञान है वही दर्शन है। माता पिता, गुरु और जीव मात्र के प्रति कैसी श्रैष्ठ भावना होनी चाहिए इसके हजारों उदाहरण है।

भारतीय दर्शन में पहला स्थान माता पिता ओर गुरु को मिला है तथा मातृ भूमि की रक्षा हेतु एवं जीव मात्र के कल्याण हेतु समर्पित व्यक्ति को महान माना गया है। इतिहास गवाह है हरे भरे वृक्षों की रक्षा हेंतु प्राणों का त्याग भी शिक्षा का परिणाम है अतः **जोधपुर के निकट खेजड़ली गांव** में **अमृतादेवी** के परिवार सहित 363 लोगो ने वृक्षों की रक्षा हेतु अपना जीवन न्यौछावर कर दिया।

राजा हरिशचन्द्र सत्य के लिये बिक जाते हैं। **संत एकनाथ** गंगाजल से भरी कावड को रामेश्वर में शिवलिंग में चढाने हेतु ले जा रहे थे पर रास्ते में प्यास से तड़पते हुए गधे को गंगाजल पिला दिया। मनुष्य मात्र के लिये इसी जीवन मूल्य शिक्षा का महत्व है।

जीवन मूल्य शिक्षा के अभाव में इंसान स्वार्थी बन जाता है और कई अपने असहाय माता पिता को भी कुंभ के मेले में घोखे से छोड़ आते हैं वहीं दूसरी और मूल्य शिक्षा से युक्त व्यक्ति पूर्ण संस्कारित एंव माता पिता को पूर्ण सम्मान देने वाले होते है। **बंकिम चन्द्र चटर्जी** ने बी.ए. प्रथम श्रेणी में अच्छे अंको से प्राप्त किया तब अंग्रेज अधिकारी ने बुलाया और कहा आपको उपखण्ड अधिकारी बनाने के आदेश करता हूँ तो उन्होने कहा अभी नहीं मैं माता पिता को पुछकर बताऊंगा, उन्होंने जन्म देकर बड़ा किया है। उन्हे पुछे बगैर निर्णय कैसे करूं। पिता पुत्र के प्रति ऐसे स्नेह का परिणाम मूल्य शिक्षा है।

वर्तमान जीवन मे दो पक्ष हैं पैसा ओर इसांनियत परन्तु व्यक्तित्व का विकास मात्र पैसो से नहीं होता, बल्कि जीवन में तपस्या, समर्पण, धर्माचरण, सहिष्णुता, उदारता, शालीनता, विनम्रता, शिष्टता, परोपकार के गुण समाहित होने से व्यक्तित्व का विकास होता है। दुर्बल मन को काबू में रखने से होता है क्योंकि मन के गुलाम रहने से सदाचार और सदगुण के जीवन में प्रवेश की सम्भावना कम रहती है।

मन पर काबू पाने के लिये प्राणायाम, सत्य, धर्म, सदकर्म, और अध्यात्म मार्ग पर चलने से मन और संयमित मन से युक्त व्यक्ति जीवन यात्रा में सहजता से आगे बढता है।

जीवन मूल्य शिक्षा से युक्त व्यक्ति देश में होंगे तो देश भी परम वैभव पर पहुँचता है और व्यक्ति भी श्रेष्ठ नागरिक बन जाता है मनुष्य जन्म को सफल करने हेतु मूल्य शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, जितना शरीर में आत्मा का। जीवन मूल्य शिक्षा में आहार एव विहार, करणीय एवं अकरणीय कार्यो का, जीवन दृष्टि तथा चरित्र निर्माण कें लिये आवश्यक गुणों का ज्ञान प्राप्त होता है जिससे जीवन उत्कृष्ट बनता है। उत्कृष्ट जीवन बनाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रतिदिन उठते ही यह चिंतन करना चाहिए कि हमारा दिन ऐसा गुजरे की रात को चैन की नींद आये तथा रात ऐसी गुजरे की सुबह दुनिया को मुह दिखाने में शर्म न आये। यह अवस्था मूल्य शिक्षा प्राप्ति से ही संभव है। अतः व्यक्ति को विकास हेतु शारीरिक एंव मानसिक रुप से स्वस्थ्य रहने हेतु व्यक्ति के कल्याण के लिये जीवन में मूल्य शिक्षा की नितांत आवश्यकता है। मूल्य शिक्षा उत्तम स्वास्थ्य एवं उत्तम चिंतन एवं उज्ज्वल भविष्य का आधार है। जिसे जीवन में अंगीकार कर जीवन को सफल बना सकते है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

1. प्रत्येक व्यक्ति के लिए मूल्य शिक्षा नितांत आवश्यक है।
2. जीव मात्र के प्रति सद्भाव की भावना एवं परमार्थ की कामना से युक्त शिक्षा को मूल्य शिक्षा कहते हैं।
3. मानव से महामानव, पुरूष से महापुरूष मूल्य शिक्षा प्राप्त कर एवं जीवन में अंगीकार कर बन सकते हैं।
4. मूल्य शिक्षा व्यक्ति का जीवन सफल करने में सहायक है।
5. वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को महान बनानें एवं सद्गुणों को धारण करने हेतु मूल्य शिक्षा प्रदान करना अत्यावश्यक है।
6. मूल्य शिक्षा प्राप्त कर व्यक्ति अपना मनुष्य जीवन सफल कर सकता है।
7. अनेक महापुरूषों के व्यक्तित्व में मूल्य शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान है।
8. महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, स्वामी विवेकानंद, मीरा बाई, पन्नाधाय का जीवन अनमोल रहा क्योंकि इन्होंने जीवन मूल्यों को सर्वोच्च स्थान देकर जीवन जीया।
9. मूल्य शिक्षा प्राप्ति से सद्गुणों का विकास होता है।
10. मूल्य शिक्षा धारण से जीव मात्र के प्रति सद्भाव जाग्रत होता है।
11. मूल्य शिक्षा के अभाव में व्यक्ति स्वार्थी बन जाता है।
12. व्यक्तित्व विकास, शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए, जीवन के कल्याण के लिए मूल्य शिक्षा की नितांत आवश्यकता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. जीवन मूल्य शिक्षा का क्या अर्थ है
2. रामायण के लेखक का नाम बताइये
3. स्वामी विवेकानंन्द ने धर्म ससंद मे ं भाषण कब दिया था
4. वृक्षों की रक्षा हेतु प्राणों की बलि किस महिला ने दी
5. आई.ए.एस. अधिकारी ने किसे शिक्षित बताया
6. जीवन को सफल बनाने के लिये किस शिक्षा का सर्वाधिक महत्व है।

निबंधात्मक प्रश्न

1. जीवन मूल्य शिक्षा का क्या महत्व है
2. जीवन मूल्य शिक्षा से क्या लाभ है
3. स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रदत्त शिक्षा के लाभ बताइये
4. जीवन मूल्य शिक्षा से मनुष्य का विकास होता है बताइये